

**THE INSTITUTE FOR
ADVANCED STUDIES
OF WORLD RELIGIONS**

**FILM—STRIP NO.
MBB—1971—132—152**

**BUDDHIST SANSKRIT
MANUSCRIPTS**

MBB-1972-132

1. Film strip number

42

2. Source

KANKIRNA TANTRA HRDAYA

3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. 1017 + 880 = A.D. 1897

5. Year in which MS was copied
(Nepali Samvat and Christian Era)

SARVAJÑAVAJRA

6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER

7. Material (Palm leaf, etc.)

NEVĀRĪ

8. Script

6

cm. x 20 cm.

9. Size

6

10. Lines to a page

17

11. Number of leaves in complete work

x

12. Missing leaves

x

13. Author and Date of composition
(if given)

x

14. Number of Chapters

15. Remarks

It is a book of Mantra used by Magicians.

The explanation of Mantra is written in Nevārī.

१कंकीरुपाष्टकम् ॥

कंकीर्त्तु

१ ॥ अं नमः नक्षत्राय च ॥ अं नमः सप्त सप्त जय जय ॥ अं सप्त सप्त विन सा ग न म हा ऊ व हं ॥
अं सप्त सप्त विम न स कं न्ध म हा ऊ व हं ॥ ध न ल्प व न्ध न सा न्द्रा उ म न्द्र वान सा न्द्रा जि
पु मा नं च ॥ १ ॥ अं सप्त सप्त विम ल सा ग न म हा ऊ व हं वा य स्वा हा ॥ वा न १ वान सा न्द्रा
क जि पु मा नं ह्नु ल्प य ॥ २ ॥ अं सप्त सप्त विन कं न्ध म हा ऊ व हं ॥ ध धा न वान सा न्द्रा जि
कि र्त्तु ध र्म दान यो ना गु र्ध्व ल्प य ॥ ३ ॥ अं सप्त सप्त विम न स प्त ऊ व हं ह्नु ल्प य वा य
वा ना उ ध र्म दान पु जा या त सा ध्या क्त्वा सप्त याम ॥ ४ ॥ अं नमः सर्वतथा गुरु हृदय

१५

अनूगग-अंकुशगिरीस्वारु॥ वापवातायापूष्यनकाटिताजन्मयातकुयापनासुहृदि॥ ३
जानमासहात्रहवदुआलंकालसर्वहमिहगजपुत्रककुमाजाय॥ तथागतागताय॥ धवा
नायापूष्यनकाटिताजन्मयातकुयापनासुहृदि॥ ३ जानमासहात्रहवदुआलंकालसर्वहमिहगजपुत्रककुमाजाय॥ तथागतागताय॥ धवा
मानेतथागताय॥ धवानसहात्रहवदुआलंकालसर्वहमिहगजपुत्रककुमाजाय॥ तथागतागताय॥ धवा
पुत्रिहासविनत्रदिनजश्वनसंपुत्रककुमाजाय॥ धवानायापूष्यनकाटिताजन्मयातकुयापनासुहृदि॥ ३
पत्रलोकासनिर्वीनपदलाय॥ ४ जानमासहात्रहवदुआलंकालसर्वहमिहगजपुत्रककुमाजाय॥ तथागतागताय॥ धवानाया

॥ ध्वजानायापूर्यन-पेधमहावापयकोऊवनहृदि ॥ १३ ॥ जंनमाहगवतमहात्रयः
र्मसंपूर्यतथागतायाहृत् संम्यक्तं वृक्षाय ॥ ध्वजानायापूर्यन-जंनं वपायनहृत् ॥
१४ ॥ जंनमाहगवतमहात्रयधर्मश्रुतिक्रिय-यत्कुरुनामाय-तथागथागतायाह
हृत् संम्यक्तं वृक्षाय ॥ ध्वजानायापूर्यन-जंनं वपायनहृत् ॥ १५ ॥
जंनमाहगवतनवनवर्तिनां संम्यक्तं वृक्षकोटिनां ॥ यत्कुरुनामाय-गगनदिवाल
कोपनां तथागतकोटिनां ॥ ध्वजानायापूर्यन-जंनं वपायनहृत् ॥ १६ ॥ जंनमा

सुखिकल्पहृदसुमदनमवागानुल्लसर्वसिद्धीप्रयच्छं॥ धनुःश्यामनि॥ २१ ॥ ओं वज्रकाद
महावीरुत्कुरु॥ ओं नृलक्ष्म्यां कुरु॥ ओं कांतफयमानकहनमर्थकुरु॥ ओं यम
नकुरुतमहाकादहयगुव॥ इति॥ २२ ॥ ओं वज्रकिलिकिलायस
र्वविगतकुरु॥ ओं गुह्यहानवीरुत्कुरुहानकातिश्वनिस्सममथागिनीनृलक्ष्म्यां कुरु॥
२३ ॥ ओं वज्रवन्धसर्वदृष्टानुहं कुरु॥ ओं वज्रमहागुप्तसर्वसिद्धिं कुरु॥ धनसुखम॥ ओं जी
पमानकवज्रकाधदयगुवहृत्कुरु॥ २४ ॥ ओं सर्वतथागतउद्दिष्ट

कंकीर्ण

बलमिति स्वाहा ॥ अंतथागत धातुविरुधित अविस्वाहा ॥ मन्त्ररुधि ॥ २३ ॥ जैनमाह गवत
पवंसर्वतथागतविरुधितिसंख्युक्तकठुध्याज मियतथागतायाहनासंम्यसंवधायनमा ॥ २४
जंआरिसुत्रनायज स्यात्सकिपसाय वज्रधातुधिकल्पहृदसमूह नमवाता नूत्र सर्वदिक्षि
यकृत्तथाहृद ॥ जंआकातकमाननमर्थरुद्र ॥ जंयथातककृतमहाकाटहृयगृवः
हृत्ररुद्र ॥ २५ ॥ जंवज्रकिलिकिलाय सर्वविघ्नलंरुद्र ॥ जंगुहाहानशीहृत्रगुहाः
हानाकातिसुत्रिसंमयागिनीत्ररुद्र ॥ जंवज्रवन्धसर्वइष्टानुद्रुद्र ॥ जंवज्रसर्वइ

[illegible]

संक्षेप

[illegible]

तज्जायायतथागतायाहर्त्तसंम्यक्तं वृद्धाय ॥ तद्यथा ॥ उं कं कनिश्चावनीरजावनीरसं
जावनीरपतिरुक्तनरसर्वकर्मपत्रपत्रानि सर्वसत्त्वानां क्त्वाहा ॥ धर्मनाथज्जाया
कनिश्चिन्तु ॥ ३३ ॥ जनमाहगवतरेष्यीगत्ररेष्यीपुत्रककुत्राजायतथागतायाहर्त्त
संम्यक्तं वृद्धाय ॥ तद्यथा ॥ उं रेख्यीरुहारेष्यीसमगतस्वाहा ॥ जातस्त्वधना ॥ ३४ ॥
जनमाहगवतः अपत्रमिताय हानसमविनिश्चिततजायाजायतथागतायाहर्त्तसंम्यक्तं वृद्धाय
॥ तद्यथा ॥ जापूथरमहापूथ अपत्रमितपूथ अपत्रिमिताय पूथ हानसमज्ञानापविश

कंकीर्

ॐ सर्वस्वागपनि सुखधर्मग गगनसमूहग हृत्वा वनि सुखमहानय पत्रिवाय स्वाहा ॥
अथ नृमिता या अरुनाम् ॥ ३० ॥ ॐ तद्यथा ॥ ॐ हे खर्यो २ महारं षष्ठा नाऊ मूनय स्वाहा
॥ ॐ हे खर्यो नाम सनूनाया ॐ ॐ हस्त विद्यता न्य चरान ॥ ३१ ॥ ॐ मयि पत्रं ॥ ॐ वाणि
ॐ त्रिं ॥ ॐ वज्रयानि ॥ ॐ लप अरुन दधि ॥ ॐ वाक दं नम ॥ ॐ चतु नायगं ॥ ॐ नानुता
ननुय स्वाहा ॥ ॐ मालिनि स्वाहा ॥ ॐ पिशाचि पर्युषवनी सर्वजालपसमनि स्वाहा ॥ ॐ पमउ
षिषवि मल हं रुद्र ॥ ॐ मलुकीना नागसाधनयाय उत गायू ॥ ॐ अथवा नायागनास्वास्त

ॐ

लसंतालायहयिमपू॥ ३२॥ ॐमनिधनीवजीनिमहापतिमन्त्रत्रुं२मांहे३रु३स्वाहा॥
ॐअमृता२अमृतवल२यवत्रविसूक्ष्म३रु३स्वाहा॥ ॐअमृतविलाकिनिमर्त्यमन्त्रत्रुं२निआक
षनि३रु३स्वाहा॥ ॐविमलविपूलत्रयवलअमृत३रु३स्वाहा॥ ॐरु२समन्त्र३
यवतमविश्वधनित्रु३रु३स्वाहा॥ ॐरु२साहस३युत३पिष्ठाव३अकालमृ३तयद
धिमृ३यव३जायाननु॥ ४०॥ ॐनमानलरुयाय॥ ॐनमातृगवतं३अकमूनय३तथाग
ताय३रु३तमन्त्र३रु३याय॥ तयथा॥ ॐअजित२अपनाजित३अजित३रु३यव२मेरीअवला

क की ३

कितक वर महासमयसिद्धि २२ प्रह्लादादि भगु विजय सम्पद २३ समाकं समयवाधि स्वाहा
जहां माहि नी स्वाहा ॥ अमुनि २ महामून सम्पद स्वाहा ॥ अमै जीक नूतमूदिता पञ्चा ॥ अम सुवा
नहा ॥ अमयतं तायु ॥ अमि तह यमू भास ॥ ४१ ॥ अं नमाभीय नम ॥ अभीय स्वाहा ॥ उरु म
भीय स्वाहा ॥ अम नम ॥ अमयत यात हा ॥ अमज कायात हा ॥ अमजि यायाता गुहलाय ॥ ४२ ॥
अं नमात् गवत यत्न कठु भाजाय ॥ अथा गताया ॥ अर्ह न संम्यक्त वृद्धाय ॥ अथथा ॥ अं नमो २ म
लात्र त्र त्र विजय स्वाहा ॥ अं नमाद सदि कि काल सर्व यत्न यथाय ॥ अं दय दऊ सर्व वाय वि

१०

[illegible]

रुकीर्तु

जुयस्वाहा ॥ अथापदानायापुथन नक्षत्रादि वज कुम्भ सुहापात्रमिता गन्धशुद्ध पाथ
यायु पूयसाय ॥ ४८ ॥ अं धिनित्रधीमृहं स्ववत ॥ अहं अहं न मरुत्सीया मूलन लुवा नाह
जमयाक अहिषक हल सां दिजायक हानं थगा लप अमिता मरुत्तानं जयाय सल्लव
नहं यान् अमुदवता पुंमल्लालपात्र अमलुवानाज पालितल सस्वानपूय नयागनव
ल अयवा किप्लं मरुत्तयाज सियिवा अहिकयका जयाय सल्लवन सज मरुत्तियज अयापुन्य
न चक्र मलापापस्य अयापुयाजन पुथक वृक्षवायका न मरुत्तनयय ॥ ४९ ॥ अं किं ॥ ध

[illegible]

कंती १

२२ हिस २ व २ रु न २ मृ म हं रु ॥ अ व ज मा गि नी या नी ग धा व नि म न्य ॥ ३४ ॥ ओं न मा न रु ता न रु
य म्मा य पू थ रु न्य पू थि नू य सा रु ॥ स म्मा व नि मा मा या म न्य ॥ ३५ ॥ ओं न मा स र्व त था ग न रु
व ला कि रं गं स म् य रु ॥ य म लु म हा वू प प न थ स यु का स या ध म न रु ॥ ३६ ॥ ओं न मा व रु स
व यु व र्क न रु थ ग ता या र्ह न स म्म क्कं व रु य ॥ रु य थ ॥ ओं व रु २ म हा व रु म हा रु जी म हा वि
घा व रु स र्व क म्मी म हा वा धि वि रु ॥ व रु म हा वा धि म अ प क ल व रु स र्व क म्मी व र्क वि रु ध नि रु
रु सा रु ॥ थ व न मा य म्मा या रु थ या स म्मा म रु ॥ ३७ ॥ ओं न मा स म न वू ध नां मृ स म र्म वा

रु १०

ॐ कार्यगतिगताना सर्वथा ॥ अथर्वं ॐ ४ सं ३ हं ४ नं ४ वं ४ स्वाहा ४ नं ४ स्वाहा ४ वं ४ स्वा
हा ॥ आवकवेकवनवा ॥ ३८ ॥ गनमा ४ सर्वततागत महाजीय ४ वं ४ नं ४ ॥ अनन
महावज्जगननाद्यय ॥ ४२ ॥ गनमा ४ गवत सर्वदूर्गतिपत्रिध्वधन सर्वयायः
त्रिध्वन ४ वं ४ वि ४ सर्वकमीवनविध्वधनस्वाहा ॥ गं सर्वविदू सर्ववनविध्वध
नस्वाहा ॥ पद्विंतिवित्तामहावेकवनया ॥ ४० ॥ गं ४ सर्वदूर्गतिपत्रिध्वधन
दययद्व ४ वं ४ हं ४ गवानहानमूर्तिवागिध्वनमहानाव सर्वधर्मागगत ४ नं ४ स्यत्रिध्व

[illegible]

अंकीर्ण

नहंरुद्र॥ अं य मा न्त क हं रुद्र॥ अं ज न्त क प सर्व दाम य य म्भ वा न न या द या य द नि य क
य य क य क नी य हं रुद्र स्वाहा॥ य क दि ह ति व ज रे न व क म य म न्त॥ अं श्री य क रु न्त क हं
रुद्र॥ अ कि नी मा स सं स वं स्वाहा॥ अं श्री ४ ह हं रुद्र॥ अं य क वे ना न नी य हं रुद्र॥ अं सर्व व
ह अ कि नी य हं रुद्र॥ अं सर्व वृक्ष अ कि नी य व ज र र्थ नी य व ज वे ना न नी य हं रुद्र रुद्र
स्वाहा॥ ध व क सं स व न व ज वि मा स नि या ह य य म न्त वा न नि नू ता न॥ ७१ अं श्री ४
स नि य म हं॥ अं व ज वा ना हि वृक्ष अ कि नी य व ज वे ना न नी य हं रुद्र॥ म हा का नू य व ज वा

११

[illegible]

कंकी ३॥ स्वाहा ॥ ओं श्रीं श्रीं स्वाहा ॥ ओं वृद्धां किं नीमां कीं ॥ तं गवान्मम साया चानि मम ॥ १३ ॥ ओं जीं
थिं विक्राननाय हं हं स्वाहा ॥ जर्मसाया लव्य स मम ॥ १४ ॥ ओं प सवर्क सात ३ मिमा
द निरा न दाय वज्र क स द व द हं हं स्वाहा ॥ किं न ल व मा ॥ १५ ॥ ओं ग व जि न वि म ना स उ
व म ल क हं हं स्वाहा ॥ तं म ति या म नु ॥ ओं म क स म व य हं हं ॥ ह म म किं नी या म नु ॥ १६ ॥ ओं
आ हं किं न २ सिं ह क व दि स ३ व द हं हं य न न द ग स र्व मा व य हं हं स्वाहा ॥ म ल व क ल य
म ॥ १७ ॥ ओं हं हं २ ॥ ओं व ज पा नि ह य ग व क न न हं हं ॥ व न ल व न सा ॥ म म ल व म ति

[illegible]

कंकीर्त्तुं ॥ १० ॥ ओं वे स्वाहा ॥ ओं वे शु व नाय स्वाहा ॥ ओं क म् व ज न नाय स्वाहा ॥ ओं पू र्ण नाय स्वाहा ॥ ओं मा निरु डा
 य स्वाहा ॥ ओं क् व नाय स्वाहा ॥ १० ॥ ओं सं व नाय स्वाहा ॥ ओं गु ण नाय स्वाहा ॥ ओं य म् वि रु द्ध य स्वा
 हा ॥ ओं वि धि क् शु लि य स्वाहा ॥ ओं म् क् शु र्णी य स्वाहा ॥ ओं म् क् शु र्णी या द वी क् कालि २ महा कालि र्द रु द्
 ॥ ध्म र्म नाथ याथ ॥ ११ ॥ ओं न मा त्म म् न द्ध नां अवि न्त न् यानि ॥ ध्म म् नु वि द्या ध्म म् न
 यि गु ष्म वि द्या नाथ ॥ १२ ॥ ओं न मा त्म ग वत अष्ट म् क् शु क्ता य हा पा य मि ता गर्ह ॥ त द् य था ॥ ओं म् न २
 ग्हा म् न ध्म म् सं का र्ताः ध्म म् न स्य नि लि र्म य का र्त्तु म् लि र्म य ध्म म् न ग्हा म् न ध्म म् न स्य नि लि र्म य

विजयधधत्रिपहापात्रयस्वाहा ॥ धृतिवानमा नकार गति पाययानागुरुनययी ॥ २३ ॥ ॐ
नमातृगवतयध्वविंस्रिकायहापात्रमिताये ॥ तद्यथा ॥ पद २ महापद सर्वतत्रपहापासर्वः
हानउजत्रपहात ॥ सुकनसिकसि ४ सुधु २ कत २ तधु २ सन २ धनवत्रयल ४ गर्कतिरुद्रु स्वाहा
॥ धमनुवानमा पदविंस्रिका ॥ धमनुवानमा ॥ २४ ॥ ॐ नमातृगवत सर्वतथा
गतहृदय अनुगत ॥ ॐ नृगितिस्वाहा ॥ २५ ॥ ॐ नमाकार्यमहेष्टीय ॥ तद्यथा ॥ गगत्
मानगती पात्र संगतवाधियस्वाहा ॥ २६ ॥ ॐ नमातृगवत ध्वजानपहापात्रमिताये ॥ २७ ॥

कंकीर्ण

जंनमाह गवत समजह डाय विमहाय महासुखाय निरुक्ता निकाय ॥ तद्यथा ॥ तह वसुधायः
स्वाहा ॥ उपविष्टुं नाम वायनि च यथास्तुतय के महायापनास्तुति ॥ २८ ॥ जंनमाह ग
वत महावत्तुतज पुरककुमाजाया तथागताया र्हित संम्यक्तं वृद्धाय ध्यायताया पूज्यते ॥
सिंहायानां पुत्राय नास ॥ २९ ॥ जंनमाह गवत महावत्तु अरि वन पूज्यकुमाजाय तथाग
ताया र्हित संम्यक्तं वृद्धाय ॥ ध्यायताया पूज्यते ॥ ३० ॥ जंनमा
ह गवत वन्दु सन गा पज्ज्यात्मक धर्मिणानि जय हूषित तथागताया र्हित संम्यक्तं वृद्धाय ॥ च

१४

वानसा यत्कायायनामास ॥ २१ ॥ गेनमाह गवतः परुसितवज्रसिद्धिः परुसित्विंसतियसतः
सहस्रयात्रमितायः तथा गतायाः हन्तः सम्यक्कां वृद्धाय ॥ ध्वनिस्तः कामः कृत्वा मोहः माया य
काया यत्तामसश्चि ॥ २२ ॥ गेनमाह गवतः नवतिनवतिनां सम्यक्कां वृद्धाय वृद्धकातिनां द
सगमनदिलकायनां तथा गतकातिनां ॥ वृद्धकां वित्तवीनां गुणितः ध्वनिः सिद्धिनायाः
यस्य नः लिङ्गस्य ॥ २३ ॥ गेनमाह गवतः परुसितवज्रसमन्ततथा गतायाः हन्तः सम्यक्कां वृद्ध
य ॥ ध्वनिस्तः कामः कृत्वा मोहः माया यत्तामसश्चि ॥ वृद्धकां वित्तवीनां गुणितः ध्वनिः सिद्धिनायाः

कंकीरु

तथागतववयवतापि स्वकृतमुपाय हनं हिंसां कृतमयातापाय हनं मांभं अशुचिं
त इव विद्याविमुपाय हनं वासं वादपित वासं धनमुपाय हनं आषल नूनामुपाय हनं
हस्तं लयनकाउपाय हनं अकर्म अर्थन्याताउपाय पद्मयात कल्यण इतथागतनं अति
हिंसायाज विज्ञात हनं यथापाप हनं पाप ॥ हनं पुमुपाय या कष्टरूपं लसतकाजी ॥ १३
वायनि हवय मनु चकविलयाताजी फलसपीतु यासस संकमिकरु रत उगुवल
स हसवयाज यास गथतस्मरु ॥ यथं दसां सलपाय ह्युग काय वाय हिंसावाक्य

१३

कथं न विलुप्य नृगलः धर्मां यानां यायः संपूर्णस्यैव कृतं उपरोक्तं वदति विष्णोः
महाशुभं वियं विहगवानतकलिकालसः धर्मावकपवकता यायः वक्तुं युक्तं तयाशवि
कृतं ॥ हनंयुगपुष्टकं मङ्गलीसमूहनामधर्मस्वाति जीवन्मृतीनं रक्षित्वा वनं धनं
रक्षित्वा ॥ स्ववाद ॥ कलिरुगलः मनुष्यलोकं धारयद्यकं मनीषां कृतं विष्णोः सत्यं
तथा ॥ २४ ॥ अंनमारुगवत वीराय न यत्कुरुता जायः तथा गतायाः हन्ता संपूर्णं
वृद्धाय ॥ तथा ॥ अंनमारुगवत समन्तं तथा गताया वा विमल्लायः महामल्लायः महा

कंकीर्ण

काशिकाय ॥ गद्यथा ॥ यद्यियवमववाधनिस्त्राहा ॥ अंधूत्रमयमवववाहा ॥ पल्लिमल
वानसा मरुमरुतायलकुजिवातायाउतिरुलदयिवा ॥ २३ ॥ धूतिवीकंकीर्णतल्लह
दयपनिममाफ ॥ २४ ॥ यधर्माहुडुयहावा ॥ हवजुतखांतठागाह ॥ हवजुतखांच
जानिपदचववादिमहालुवयं ॥ २५ ॥ लुयासंवत १०१०मिति ॥ आसून ११११ ॥ ह
सातजग १०११जग १०१२जग १०१३जग १०१४जग १०१५जग १०१६जग १०१७जग १०१८जग १०१९जग १०२०जग
मरुल १०२१जग १०२२जग १०२३जग १०२४जग १०२५जग १०२६जग १०२७जग १०२८जग १०२९जग १०३०जग

पुष्प

